द्वितीय सेमेस्टर मध्य एवं आधुनिक इतिहास विभाग

भारत का सांस्कृतिक इतिहास - 1200 - 1900 ई. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

~~सही~~ उत्तर ~~का चुनाव लिखिये~~ - पाठ्य सामग्री

1- भक्ति आन्दोलन का उद्भव स्थान दक्षिण भारत माना जाता है, इसे उत्तर भारत में लाने वाले प्रमुख संत थे - रामानन्द

2- 'कबीर' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है - महान

3- 'मसि कागद छूयो नहिं, कलम गह्यो नहिं हाथ' उक्ति सम्बन्धित है - कबीर

4- किस भक्ति संत के विचार 'बीजक' में संगृहित है - कबीर

5- 'गुरुनानक' का जन्म हुआ था - तालवंडी में

6- भारत में सिख धर्म के संस्थापक थे - गुरुनानक

7- 'गौरांग निमाई' बचपन का नाम था - चैतन्य का

8- चैतन्य के उपास्य देव हैं - कृष्ण

9- किस संत के जन्म के समय मुंह में दांत थे - तुलसीदास

10- 'रामचरित मानस' प्रसिद्ध ग्रन्थ है - तुलसीदास का

11- 'तुलसीदास' की भक्ति साधना के उद्देश्य थे -
अ- प्राचीन हिन्दू सामाजिक व्यवस्था की रक्षा
ब- शूद्रों को अधिकार देकर इस्लाम धर्म स्वीकार करने से रोकना
स- भक्ति के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति को सरल बनाना।

12- 'सूफी' शब्द का अर्थ है - ऊन

Scanned with CamScanner

13- 'खानकाह' वह स्थान है जो - गृहविहीन सूफी साधकों के लिये शरण स्थल था, इसने एक साथ मिलकर विचारों के आदान प्रदान का अवसर दिया और एक दूसरे की आलोचना करके उनमें सुधार लाने का प्रयास किया।

14- सूफी सिलसिले का उदय 12वीं शताब्दी में हुआ।

15- भारत में चिश्ती सिलसिले की स्थापना - मुइनुद्दीन चिश्ती ने

16- अजमेर में प्रसिद्ध दरगाह - मुइनुद्दीन चिश्ती की है।

17- 'चिल्लाह-रु-मा-अकुस' की साधना करने वाले थे - बाबा फरीद

18- निजामुद्दीन औलिया - जीवन काल में दिल्ली के सात सुल्तानों का शासन देखा। किसी के साथ इनका अच्छा सम्बन्ध नहीं था। गयासुद्दीन तुगलक ने इनके संगीत समारोहों के कारण इनके विरुद्ध मुकदमा चलवाया।

19- चिश्ती सिलसिले में 'चिल्ल' से अभिप्राय है - साधक ५० दिनों तक किसी मस्जिद अथवा बन्द कमरे में अपना समय व्यतीत करता था, उस समय वह अल्प भोजन करता था, अपना सारा समय प्रार्थना तथा ध्यान में लगाता था।

20 नक्शबन्दी सिलसिले के प्रवर्तक ख्वाजा उबैदुल्ला थे, कुछ लोगों ने ख्वाजा बहाउद्दीन को इसका संस्थापक माना है। ये तरह तरह के नक्शे आध्यात्मिक तत्वों के सम्बन्ध में बनाते थे और अनेक रंगों से भरते थे, इसलिये इनके अनुयायी नक्शबन्दी कहलाये। भारत में इस सिलसिले का प्रचार शेख अहमद फारूकी सरहिन्दी ने किया।

Scanned with CamScanner

21- मुस्लिम आगमन से पूर्व भी भारतीय समाज विभिन्न वर्गों में विभक्त था। मुसलमानों के आने से इसका विभक्तीकरण बढ़ गया। सर्वाधिक सम्मानित वर्ग विदेशी मुसलमानों का था। यह शासक वर्ग था।

22- विदेशी मुसलमान- तुर्क, ईरानी, अरब, अफगान, अबीसीनियाई में विभक्त थे।

23- समाज का दूसरा वर्ग भारतीय मुसलमानों का था। ये वह ही मुसलमान थे जो हिन्दू से मुसलमान बने थे। विदेशी मुसलमानों ने इन्हें अपने बराबर नहीं समझा और इन्हें हेय दृष्टि से देखा।

24- सल्तनतकालीन समाज का बहुसंख्यक हिन्दू वर्ग विभिन्न जाति वर्गों में विभक्त था, मुस्लिम आगमन के बाद जाति बन्धन कठोर हो गये। जिससे नवीन उप-जातियां बनी।

25- सल्तनत काल में हिन्दुओं के साथ जिम्मियों जैसा व्यवहार किया जाता था, उन्हें उच्च पद नहीं प्राप्त होता था। फिरोज तुगलक और सिकन्दर लोदी ने मुसलमानों को हिन्दू बनाने के अपराध में ब्राह्मणों को दण्ड दिया

26- हिन्दू-मुस्लिम दोनों में दास रखे जाते थे, क्रय-विक्रय होता था यद्यपि उनके जीवन व सम्पत्ति पर मालिक का अधिकार था, पर सामान्यतः उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता था।

27- स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आयी। एक विवाह का प्रचलन था परन्तु धनवान बहुविवाह कर लेते थे। पर्दा, सती प्रथा प्रचलित थी। विधवा पुनर्विवाह अनुमति नहीं थी। मन्दिरों में देवदासी प्रथा थी।

28- अकबर ने 1562 ई. में दास प्रथा समाप्त की। 1563 तीर्थयात्रा कर तथा 1564 में जजिया समाप्त किया।

Scanned with CamScanner

29- जजिया - मुस्लिम राज्य में गैर मुस्लिम को देना पड़ता था। यह प्रजा में भेद करता था, अतः अकबर ने इसका उन्मूलन किया।

30- प्रयाग, बनारस आदि स्थानों पर स्नान सम्बन्धी तीर्थयात्रा कर समाप्त किया तथा मुंडन विधियों से जबरन इस्लाम स्वीकार कराने की प्रथा भी समाप्त की।

31- धार्मिक मतभेदों में टकराव की स्थिति को रोकने के लिये अकबर ने 'सुलहकुल' (सबके लिये शांति) की नीति अपनायी।

32- अकबर ने 1575 में फतेहपुर सीकरी में सभी धर्मों के सिद्धान्तों को जानने के लिये 'इबादत खाने' (उपासना कक्ष) का निर्माण करवाया।

33- अकबर ने सभी धर्मों के बीच शांति और सामन्जस्य स्थापित करने के लिये संस्कृत, अरबी, यूनानी, आदि भाषा के ग्रन्थों का फारसी अनुवाद कराने के लिये अनुवाद विभाग स्थापित किया। इसमें सिंहासन बत्तीसी, अथर्ववेद, बाइबिल, महाभारत, गीता, रामायण, पंचतन्त्र कुरान का फारसी भाषा में अनुवाद कराया गया।

34- अकबर ने सती प्रथा पर रोक लगायी और विवाह की आयु बढ़ाकर लड़की के लिये 14 व लड़के के लिये 16 वर्ष निर्धारित की।

35- अकबर ने एक विशाल पुस्तकालय बनवाया जिसमें 24,000 ग्रन्थ थे।

36- अकबरनामा के रचयिता हैं - अबुल फजल

37- बदायुनी अकबर की धार्मिक नीति का कटु आलोचक था इसने मुन्तखब-उत तवारीख की रचना की तथा रामायण का फारसी में अनुवाद किया।

38- विनयपत्रिका के लेखक हैं - तुलसीदास

39- कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में 'कुवतुल इस्लाम' तथा अजमेर में 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' मस्जिद बनवायी।

Scanned with CamScanner

५०- कुतुबमीनार (दिल्ली) का निर्माण कार्य कुतुबुद्दीन ऐबक ने आरम्भ किया इसे पूरा इल्तुतमिश ने करवाया।

५१- इल्तुतमिश ने अपने पुत्र नासिरुद्दीन मुहम्मद का मकबरा सुल्तानगढ़ी बनवाया (दिल्ली)

५२- बलबन ने स्वयं का मकबरा और 'लाल महल' बनवाया (दिल्ली)

५३- अलाउद्दीन खिलजी- महान निर्माता था। उसकी इमारतें धर्मनिरपेक्ष इस्लामी विचारधारा के अनुरूप बनवायी गई। उसने सीरी का नगर बसाया, हजार खम्भों वाला महल बनवाया, जमैयत खाना मस्जिद तथा अलाई दरवाजा बनवाया।

५४- गियासुद्दीन तुगलक ने नवीन नगर 'तुगलकाबाद' बसाया तथा उसमें उसने स्वयं का मकबरा और महल बनवाया।

५५ मुहम्मद तुगलक ने 'जहांपनाह' नाम का नगर दिल्ली के निकट बसाया, तुगलकाबाद के निकट आदिलाबाद का किला बनवाया उसकी बनवायी इमारतों में 'सथपलाह बांध' और 'बिजाई-मण्डल' नामक इमारत के अवशेष अभी भी हैं।

५६- फिरोज तुगलक ने दिल्ली के समीप फिरोजाबाद, फिरोजशाह कोटला का नगर दिल्ली के पास एक विद्यालय और स्वयं का मकबरा बनवाया।

५७- फिरोज तुगलक के पुत्र खाने जहां जूना शाह ने 'खाने जहां-तिलगानी का मकबरा, उसके निकट 'काली मस्जिद', जहांपनाह में 'खिरकी मस्जिद और 'कलम मस्जिद' बनवायी।

५८- नासिरुद्दीन मुहम्मद तुगलकशाह के समय बनी इमारत कबीरुद्दीन औलिया की कब्र पर बना मकबरा 'लाल गुम्बद' है।

५९- 'मोठ मस्जिद' सिकन्दर लोदी के प्रधानमन्त्री ने बनवायी।

Scanned with CamScanner

50- जौनपुर में इब्राहीम शाह शर्की ने अटाला मस्जिद को पूरा किया तथा 'झंझरी मस्जिद' बनवायी। हुसैन शाह ने 'जामी मस्जिद' और 'लाल दरवाजा' मस्जिद बनवायी।

51- विजयनगर सम्राट द्वारा बनवाया गया विट्ठलस्वामी का मन्दिर दक्षिण भारत की श्रेष्ठ इमारत है। विजयनगर शासकों ने 'गोपुरम' बनाने की प्राचीन कला (मन्दिर के प्रवेश द्वार पर बनवाया गया गुम्बद) को विकसित किया।

52- मुगल स्थापत्य कला- मध्य एशिया की इस्लामी कला और भारतीय हिन्दू कला का मिश्रित रूप है। अकबर के समय से इसे राष्ट्रीय स्थापत्य कला स्वीकार किया जा सकता है। अकबर के समय लाहौर, आगरा, इलाहाबाद में किले बनवाये गये। फतेहपुर सीकरी में दीवाने आम, दीवाने खास, पंचमहल, जोधाबाई महल, बुलन्द दरवाजा, शेख सलीम चिश्ती का मकबरा प्रमुख हैं।

53- 'दीनपनाह' इमारत हुमायूं ने बनवायी, शेरशाह ने इसे नष्ट किया।

54- जहाँगीर ने सफेद संगमरमर में पच्चीकारी कला आरम्भ की, जो शाहजहां के समय श्रेष्ठतम स्थिति में पंहुची। उसने आगरा के निकट सिकन्दरा में 'अकबर का मकबरा', जिसकी योजना अकबर ने बनायी थी को पूरा करवाया। लाहौर में स्वयं का मकबरा बनवाया। आगरा में नूरजहां के पिता की कब्र पर एतमादुद्दौला का मकबरा बनवाया। यह मुगलकाल की सफेद संगमरमर से बनी पहली इमारत है जिसमें अधिकतम पच्चीकारी तथा कीमती पत्थरों का प्रयोग है। इसे ताजमहल का दूसरा रूप माना जाता है।

Scanned with CamScanner

55- शाहजहां के समय मुगल स्थापत्य कला श्रेष्ठता पर पहुंच गई। सफेद संगमरमर अन्य कीमती पत्थरों का प्रयोग, कीमती गाढ़े रंगों का प्रयोग उसके समय की विशेषता थी। उसने आगरा में दीवाने आम, दीवाने खास, मच्छी भवन, शीशमहल, खासमहल, अंगूरी बाग, मोती मस्जिद, जामा मस्जिद, तथा दिल्ली में जामा मस्जिद, लालकिला बनवाया। आगरा की जामा मस्जिद शाहजहां की बड़ी पुत्री जहांआरा द्वारा बनवायी गई थी।

56- मुमताज महल (अर्जुमन्द बानो) की स्मृति में ताजमहल, शाहजहां ने 9 करोड़ रुपये की लागत से 22 वर्षों में पूरा करवाया।

57- मुगल काल में चित्रकला फारस (ईरान) और भारतीय हिन्दू चित्रकला का मिश्रित रूप था। इस्लाम धर्म में चित्रकला का निषेध होने के कारण मुस्लिम शासक इसे प्रोत्साहन नहीं देते थे। बाबर और हुमायूं को चित्रकला में रुचि थी अतः उन्होंने इस्लाम का निषेध स्वीकार नहीं किया।

58- हुमायूं ने फारस के प्रसिद्ध चित्रकार बिजहाद के शिष्य ख्वाजा अब्दुस समद और मीर सैयद अली को भारत बुलाया।

59- हुमायूं और अकबर ने ख्वाजा समद से चित्रकारी सीखी।

60- अकबर ने अब्दुल संमद के नेतृत्व में चित्रकला का पृथक विभाग खोला। पुस्तकों के साथ फतेहपुर सीकरी के महलों की दीवारों पर भी चित्र बनाने की आज्ञा दी। चीन और फारस से चित्रकार आमन्त्रित किये। उसके दरबार में 100 अच्छे चित्रकार थे। फारसी चित्रकारों में अब्दुल समद, फरूखबेग, जमशेद थे हिन्दू चित्रकारों में दसवन्त, बसावन, सांवलदास, तारचन्द, जगन्नाथ लाल, मुकुन्द हरिवंश प्रमुख थे।

Scanned with CamScanner

61- जहांगीर के समय चित्रकला उन्नति की पराकाष्ठा पर थी। उसने अपने बगीचे में एक चित्रकला कक्ष बनवाया।

62- जहांगीर के समय आगा रजा, मुहम्मद नादिर, मुहम्मद मुराद, बिशनदास मनोहर, माधव, तुलसी, गोवर्धन प्रमुख चित्रकार थे।

63- शाहजहां के काल में आकृति-चित्रण और रंग सामन्जस्य में कमी आयी किन्तु रेखांकन और बार्डर बनाने में उन्नति हुई।

64- शाहजहां के दरबार में फकीर उल्ला, मीर हाशिम, अनूप चित्रा आदि प्रमुख चित्रकार थे।

65- औरंगजेब ने चित्रकला का विरोध किया और उसने अनेक स्थानों के चित्रों को नष्ट करवाया। अतः चित्रकला दरबार से हटकर प्रान्तों में विकसित हुई।

66- मुगलकालीन चित्रकारों ने हमजानामा, बाबरनामा, तिमूरनामा, रज्मनामा, शाहनामा, लीलावती, लैला मजनू, अकबरनामा को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

67- राजपूत चित्रकला हिन्दू मुस्लिम सहयोग तथा समन्वय का परिणाम था। राजपूत शासकों ने संस्कृत, पाली, तथा मारवाड़ी में लिखित पुस्तकों तथा उसके किनारों को चित्रित किया है। कुम्भलगढ़ में महाराणा कुम्भा के संरक्षण में पुस्तकों का चित्रण हुआ।

68- राजपूत शैली के चित्रकारों ने ग्राम्य जीवन, कृष्ण, नायक भेद, ऋतुयें, पौराणिक कथाओं का चित्रण विशेष रूप से किया है।

69- रामायण, महाभारत की घटनाओं का चित्रण हुआ है।

70- नादिर शाह तथा अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों का विनाशकारी प्रभाव राजस्थानी चित्रकला पर पड़ा इसके बाद चित्रकला का पतन हुआ।

Scanned with CamScanner

71- इंजन का अविष्कार नूरजहां ने किया।

72- आनन्दी बाई जोशी - महाराष्ट्र की पहली महिला डाक्टर

73- सावित्री बाई फुले - पहली महिला शिक्षिका

74- मैडम भीमाजी कामा. भारत तथा विदेशों में राष्ट्रीय क्रांतिकारी आन्दोलन में संलग्न थी। क्रिसमस उपहार के रूप में रिवाल्वर को पत्रिकाओं में छुपाकर भारत भेजती थी। 1907 में उन्होंने स्टुटगार्ड में सम्पन्न इन्टरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस में भागलिया और भारतीय झण्डा फहराकर भारत की आजादी के लिये कांग्रेस को सहमत किया।

75- एनी बेसेन्ट कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष।

76- उन्नीसवीं शताब्दी भारतीय इतिहास में पुनर्जागरण की शताब्दी कहलाती है, जिसके फलस्वरूप ब्रह्म समाज, आर्यसमाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसाफिकल सोसाइटी, अलीगढ़ आन्दोलन अस्तित्व में आये।

77 पाश्चात्य संस्कृति एवं शिक्षा से संपर्क, ईसाई मिशनरी का भारत में आगमन, सुधारकों का प्रभाव, विदेशियों से भारत की प्राचीन संस्कृति का गौरव ज्ञान, एशियाटिक सोसायटी के कार्य, समाचार-पत्र-पत्रिकाओं के योगदान से भारत में उन्नीसवी शताब्दी में पुनर्जागरण हुआ।

78- 22 मई, 1774 ई. को बंगाल के वर्द्धवान जिले के राधानगर ग्राम में राजाराम मोहन राय का जन्म हुआ। राजा की उपाधि उन्हें अकबर द्वितीय ने प्रदान की। 1814 में उन्होंने 'आत्मीय सभा' की स्थापना की।

79- 1817 में डेविड हेयर ने कलकत्ता में "हिन्दू कालेज" की स्थापना की, जिसमें राम मोहन राय ने सहयोग दिया। तथा कलकत्ता में अपने खर्च से एक अंग्रेजी स्कूल चलाया।

80- 20 अगस्त, 1828 को राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की। तथा 'संवाद कौमुदी' नामक पत्रिका चलायी।

Scanned with CamScanner

81- ब्रह्म समाज ने, समाज में प्रचलित जातीय भेदभाव, बालविवाह, बहुविवाह, बाल हत्या, विधवा विवाह के लिये प्रयास, अंधविश्वास एवं रूढ़िवादिता के अंत के लिये कार्य किये।

82- सती प्रथा के उन्मूलन में राजा मोहन राय का विशेष योगदान रहा। इनके प्रयासों के परिणामस्वरूप 1829 ई० विलियम बेंटिक ने कानून बनाकर सती प्रथा को अवैध घोषित किया।

83- राजा राम मोहन राय के सुधारों के विरोध में राधाकान्त देव ने 'धर्म सभा' की स्थापना करके किया।

84- 1824-ई-में गुजरात के टंकरा नामक गांव में दयानन्द सरस्वती का जन्म हुआ। इनके बचपन का नाम मूलशंकर था। 14 वर्ष की आयु तक इन्होंने वेदों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था

85- 1874 ई. में दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की।

86- 1875 ई. में दयानन्द ने 'आर्य समाज' की स्थापना की।

87- दयानन्द ने वेदों की ओर लौटो और 'भारत भारतीयों के लिये' का नारा दिया।

88- आर्य समाज ने बाल विवाह, बहुविवाह, परदा प्रथा, सती प्रथा, जाति प्रथा, अशिक्षा, स्त्री शिक्षा अन्तर्जातीय विवाह तथा विधवा विवाह की दिशा में कार्य किया।

89- दयानन्द का मानना था वैदिक धर्म ही सभी धर्मों में श्रेष्ठ है, क्योंकि उसका आधार वेद हैं जो ईश्वरीय देन है। उन्होंने हिन्दू धर्म को सरल बनाकर उसकी श्रेष्ठता को फिर से स्थापित करने का प्रयास किया।

90- शब्दीय क्षेत्र में उन्होंने 'नमस्ते' शब्द प्रचलित किया जो आज भारत के साथ विदेशों में भी लोकप्रिय है।

Scanned with CamScanner

91- आर्य समाज स्त्री शिक्षा व प्राचीन गुरुकुल पद्धति का प्रबल समर्थक था। दयानन्द की मृत्यु के बाद आर्य समाज के नेता मुंशीराम ने 1900 ई. में हरिद्वार में 'गुरुकुल कांगड़ी' की स्थापना की। बाद में मुंशीराम श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुये। आर्य समाज के दूसरे नेता लाला हंसराज ने भारत में कई जगह दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज की स्थापना की।

92- 'तूफानी भ्रमण करने वाले साधु' के रूप में विख्यात विवेकानन्द के बचपन का नाम नरेन्द्रदत्त था। उनका जन्म 12 जनवरी, 1863 में कलकत्ता में हुआ था।

93- विवेकानन्द ने तीन प्रमुख उद्देश्यों को लेकर कार्य किया- हिन्दू धर्म में हिन्दुओं की फिर से आस्था जागृत करना, धर्म की पुनः स्थापना करना, तथा भारतीयों को अपनी प्राचीन संस्कृति के गौरव का ज्ञान कराना।

94- विवेकानन्द ने 1887 में अपने गुरु रामकृष्ण की मृत्यु के बाद काशीपुर के निकट बारानगर में 'रामकृष्ण मठ' की स्थापना की। इसी समय इनका नाम स्वामी विवेकानन्द पड़ा और उन्होंने संन्यास ग्रहण किया।

95- 1893 ई. सम्पूर्ण भारत का भ्रमण करने के पश्चात अमरीका के शिकागो नगर में सर्वधर्म सम्मेलन भाग लेने गये। विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेकर विश्व के सभी धर्मों में एकता स्थापित करना चाहते थे। साथ ही भारत के शिक्षित वर्ग को बताना चाहते थे कि भारतीय संस्कृति का पाश्चात्य लोग कितना आदर करते हैं।

96- 1895 ई. में विवेकानन्द पेरिस होते हुये लन्दन गये, वहाँ भी धर्म प्रचार किया। एक बार फिर अमरीका गये और इसके पश्चात 1897 में भारत आ गये। 5 मई, 1897 को 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की। 1899 में बेलूर में मठ स्थापित किया।

Scanned with CamScanner

97- 'अलीगढ़ आन्दोलन' के जनक सर सैयद अहमद खां थे।

98. मुसलमानों में अंग्रेजी शिक्षा और आधुनिकीकरण की ओर ले जाने का प्रयास सर सैयद अहमद खां ने प्रारम्भ किया।

99- सर सैयद ने 1864 में गाजीपुर में एक अंग्रेजी शिक्षा स्कूल स्थापित किया, 1865 में विज्ञान समाज की स्थापना की, जिसका प्रमुख कार्य अंग्रेजी की पुस्तकों का उर्दू भाषा में अनुवाद करना था।

100- 1870 में सर सैयद ने 'तहजीब उल अखलाक' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन करके सम्पूर्ण भारतीय मुस्लिम समाज में समाज सुधार सम्बन्धी विचार प्रेषित किये।

101- 1875 में अलीगढ़ में 'एक मुस्लिम एंग्लो ओरियण्टल स्कूल' की स्थापना की। इसमें मुस्लिम धर्म के साथ अंग्रेजी तथा विज्ञान आदि विषयों की शिक्षा पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से देने की व्यवस्था की गई। 1920 में यह कालेज अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त 'अलीगढ़ विश्वविद्यालय' बना।

Scanned with CamScanner